

# “शिक्षा स्नातक स्तर के प्रशिक्षणार्थियों में शान्ति शिक्षा के प्रति जागरूकता”

निर्देशिका  
डॉ. अमिता जैन  
सहायक प्रोफेसर ( शिक्षा विभाग)  
जैन विश्वभारती संस्थान, लाडनूँ (नागौर)

शोधकर्ता  
मनोज कुमार जैन  
शिक्षा विभाग  
जैन विश्वभारती संस्थान, लाडनूँ (नागौर)

## सारांश

मानव को शान्ति पूर्ण जीवन व्यतीत करने के लिए वे सारे गुण अपनाने होंगे जिससे सामाजिक, दार्शनिक, आर्थिक मनोवैज्ञानिक, सांस्कृतिक तथा ऐतिहासिक रूप से शान्ति स्थापित हो सके। इसके लिए शान्ति शिक्षा को माध्यम बनाना पड़ेगा। बिना माध्यम के हम बच्चों को किस प्रकार सिखा पायेंगे। जैसे ब्लैक बोर्ड हमारे पास नहीं होगा, चॉक हमारे पास नहीं होगा तो हम गणित कैसे सिखा पायेंगे। यदि नक्शा हमारे पास नहीं है तो हम कैसे बता पायेंगे कि कौन सी रेलगाड़ी कहाँ से कहाँ तक जाएगी। अतः कुछ न कुछ देने के लिए एक माध्यम का होना अत्यन्त आवश्यक है। शान्ति स्थापना के लिए शान्ति शिक्षा देने के अतिरिक्त अन्य कोई विकल्प नहीं हैं मानव ने सदैव ही जीवन में आषा-निराषा, प्यार-घृणा, जीवन-मृत्यु, आनन्द-कष्ट, प्रकाश-अन्धकार का सामना किया है। तथा सदा ही सृजनात्मक वृत्तियों का वरण किया है। सत्य की खोज, प्यार, स्नेह, भाईचारा, मित्रता, सहयोग, सौहार्द, राष्ट्रप्रेम सहायता, संवेदनशीलता आदि गुण आज के मानव में हर कीमत पर विकसित किये जाने चाहिए। और इन सब के लिए शान्ति शिक्षा की महत्वपूर्ण भूमिका सर्व विदित है।

**मूल शब्द :** शान्ति शिक्षा, समानता, सहानुभूति।

## प्रस्तावना—

वर्तमान वैश्विक युग में जहाँ ज्ञान के विस्तृत स्वरूप एवं नित नवीन तकनीकों का अभ्युदय हुआ है, वही असहिष्णुता, कट्टरवाद, विवाद, संघर्ष एवं आतंकवाद की निरन्तर आकांक्षाएँ भी इसी आधुनिक समाज की देन हैं। उपरोक्त समस्याओं के निदान हेतु स्नातक स्तर के विद्यार्थियों में शान्ति आधारित व्यवहार के विकास हेतु शान्ति शिक्षा की परिकल्पना की गई है इस संदर्भ में आवश्यक है कि विद्यार्थियों में शान्ति शिक्षा के प्रति जागरूकता लायी जाए।

न्याय करने की शक्ति का विकास एवं अपने व दूसरों के मानव अधिकारों के प्रति सम्मान आदि शान्ति शिक्षा की स्थापना के महत्वपूर्ण घटक हैं।

शान्ति का तात्पर्य सामंजस्य है। शान्ति शब्द संस्कृत भाषा के 'षम' धातु में क्तिन् प्रत्यय लगाने से बनता है। शम का अर्थ है—समन्वित होना। चुपचाप बैठना शान्ति नहीं है। हम चिंताओं में डूबे हुए शान्ति भाव से बैठे हैं तो वो भी शान्ति नहीं है। वस्तुतः शान्ति उसे कहते हैं जिसमें शान्त रहने पर मन में आनन्दानुभूति विद्यमान रहती है। समन्वित होना ही वास्तविक शान्ति है। हारमोनियम में सा रे ग म प घ

नी सात स्वर इस प्रकार समन्वित होकर अनेक राग रागिनियों निकालने लगते हैं। इस प्रकार लोग सामंजस्यता से रहना सीख जाए तो शान्ति स्वतः ही स्थापित हो जाएगी। नारंगी में खट्टा, मीठा, नमकीन कई रस हैं। परन्तु वे रस ऐसे समन्वित हैं कि नारंगी में एक विशेष प्रकार का स्वाद अनुभव होने लगता है। शान्ति भी ऐसा ही रस है। अब विष्व में शान्ति शिक्षा स्थापित करने के लिए हमें अषान्ति के कारणों को सोचना होगा।

यजुर्वेद का यह मन्त्र मनुष्यों को ही नहीं, सम्पूर्ण लोक के जीवों को शान्ति के लिए प्रार्थना सिखाता है।

द्यौ शान्तिः अन्तरिक्ष शान्तिः पृथ्वी शान्ति रापः शान्ति औषधयः

शान्तिः वनस्पतियः शान्तिः विष्व देवाः शान्तिः ब्रह्मा शान्ति

सर्व शान्तिः शान्ति रेव शान्ति सामा शान्ति रेधि ।।

अर्थात्— यह विषाल अन्तरिक्ष लोक शान्तिकारी हो। हमारे लिए औषधियाँ शान्तिकारी हो। हमारे लिए पूर्वरूप शान्तिकारी हो। हमारे लिए कृत और अकृत शान्तिकारी हो। वायु हमारे लिए सुखकारी होता हुआ चले, सूर्य हमारे लिए सुखकारी होता हुआ चमके। प्रबल मेघ हमारे लिए सुखकारी होता हुआ बरसे। द्यु लोक शान्ति स्वरूप हो रहा है, मध्य लोक शान्ति स्वरूप हो रहा है। पृथ्वी लोक शान्ति स्वरूप हो रहा है, जल शान्ति स्वरूप हो रहा है, औषधियाँ और वनस्पतियाँ शान्ति स्वरूप हो रही हैं, सब देवता शान्ति स्वरूप हैं ब्रह्म शान्ति स्वरूप हैं। सर्वत्र शान्ति है, शान्ति है। यह शान्ति तभी मिलेगी जब शान्ति शिक्षा पर बल दिया जाएगा।

शान्ति शिक्षा वह माध्यम है जो मानवता को गौरव प्रदान कर सकती है। यही मनुष्य को दैवत्य भी प्रदान करती है। ईश्वरानुभूति का साधन भी शान्ति शिक्षा ही है। इसी के द्वारा ही शरीर, मन, बुद्धि व आत्मा का समायोजन किया जाता है। इसलिए आज की शिक्षा व्यवस्था सिर्फ शान्ति पर ही आधारित होनी चाहिए।

शान्ति शब्द संक्षिप्त अर्थ रखते हुए भी विस्तृत महत्व रखता है। सम्पूर्ण विष्व का अस्तित्व ही शान्ति शिक्षा पर निर्भर करता है। व्यक्ति के पास सर्व शक्तियाँ होने पर भी यदि शान्ति का अभाव है तो उन्नति का होना सम्भव नहीं है। क्योंकि उन शक्तियों का सदुपयोग तभी होगा जब व्यक्ति का चित शान्त एवं वह शान्ति शिक्षा को अपने जीवन में अपनायेगा।

मनुष्य सदा से सुख की चाह करता आया है। किन्तु वह किस प्रकार प्राप्त हो वह इसे नहीं जानता। इसी कारण वह दुख भोगता है। कभी वह शरीर में सुख ढूँढता है, कभी धन में कभी परिवार में, कभी मित्रता में तथा कभी समाज में। किन्तु अन्त में वह पाता है कि ये सभी सुख के साधन नहीं हैं। ऐसी स्थिति में वह नहीं जान पाता कि आखिर सुख का राज क्या है। इसकी खोज में ही वह अपना जीवन समाप्त कर लेता है। किन्तु उसकी सुख की चाह पूरी नहीं होती।

शांति से ही मनुष्य को सुख सम्भव है। मनुष्य शांति की खोज में इधर-उधर भटकता है। जबकि मनुष्य शांति शिक्षा के माध्यम से शांति को प्राप्त कर सकता है। तब उसे अपने अन्दर शांति का एहसास

होता है। मानव जीवन का मूल मंत्र शान्ति है। संविधान के अनुच्छेद 355 में भी शान्ति सम्बन्धी चर्चा की गयी है। “संघ का कर्तव्य होगा कि वह बाह्य आक्रमण और अशान्ति से प्रत्येक राज्य की सुरक्षा करे।”

महान विचारक **ओषो के** अनुसार—यदि आपको शान्ति प्राप्त करनी है तो आप अपने को बदले। जो व्यक्ति समझदार है वे प्रतिकूल परिस्थिति में भी शान्ति को साधते हैं। आपके आस-पास सभी व्यक्ति आपके सहयोगी हैं। वह व्यक्ति जो आपके ऊपर कीचड़ उछालता हो,

आपके रास्ते में कांटे बिछा दे, सभी व्यक्ति किसी न किसी रूप में आपको संदेश देते हैं। आपका शत्रु भी आपका मित्र है। जो आपको सजग रहने की प्रेरणा देता है। हमें प्रतिकूल

परिस्थिति को ही साधना का केन्द्र बनाना चाहिए, यही जीवन का सार है, यही शान्ति है। जीवन में शान्ति प्राप्त करने के लिए यह अनिवार्य है कि हम मन के स्वार्थबद्ध आचरण की उपेक्षा करें और अन्दर से आने वाली आवाज को सुनें और तदनुसार आचरण करने का अभ्यास करें।

संयुक्त राष्ट्र संघ के सम्मेलन में स्व. श्रीमती इन्दिरा गाँधी ने अपने भाषण में कहा था— “सर्वाधिक बुनियादी तथा महत्वपूर्ण प्रश्न है शान्ति का प्रश्न। आधुनिक युद्ध जैसी बेतुकी बात और कोई नहीं है। भयंकर हथियार जितनी शीघ्रता से विनाश करते हैं।

उतनी शीघ्रता और पूर्णता से कोई अन्य चीज विनाश नहीं करती है, क्योंकि ये भयंकर हथियार न केवल मारते हैं, बल्कि मनुष्य और अजन्मे पशु को भी अपंग और विकृत कर देते हैं। जीवन एक है और विष्व भी एक हैं। हमें उन सिद्धान्तों का जिन पर हमारा अपना समाज आधारित हैं और उन आदर्शों का जिन पर वे टिके हुए हैं। उनका पुनः मूल्यांकन करना चाहिए। सभी देशों को एक समग्र प्रयास से एकजुट होकर कार्य करना चाहिए।”

**राष्ट्रपति ए.पी.जे. अब्दुल कलाम ने कहा—**“मैं मानता हूँ सदाचार से चरित्र निष्कल बनता है, निष्कल चरित्र से घर में मेल-जोल रहता है। घर में मेल-जोल से राष्ट्र व्यवस्थित रहता है और व्यवस्थित राष्ट्र से विष्व में शान्ति आती है।”

शान्ति शिक्षा व्यक्तिगत व सामाजिक ढाँचे का रूपान्तरण है। मानवता की समस्त चुनौति पूर्ण समस्या व्यक्तिगत व सामाजिक ढाँचे में उत्पन्न हिंसा है। व्यक्ति व समाज दोनों ही एक दूसरे को प्रभावित करते हैं, इसलिए शान्ति शिक्षा व्यक्तिगत व सामाजिक ढाँचे दोनों के ही रूपान्तरण का प्रयत्न है। यह रूपान्तरण हिंसा की संस्कृति का शान्ति की संस्कृति में रूपान्तरण है।

शान्ति शिक्षा एक बहुआयामी प्रत्यय है। एक तरफ यह निःपस्त्रीकरण संघर्षों के शान्ति पूर्ण समाधान, मानव अधिकारों की सुरक्षा व भौगोलिक संतुलन को बनाये रखने का प्रयत्न है, तो दूसरी ओर यह सामाजिक अन्याय, लिंग, जाति, धार्मिक मत सम्बन्धी भेदभाव, रोग शोषण, निरक्षरता तथा उपेक्षा की समस्याओं को हल करने का प्रयत्न है। केवल बौद्धिक गुणों के विकास से ही एक शान्त एवं युद्ध रहित संसार की स्थापना नहीं की जा सकती है। इसके लिए सर्वप्रथम शान्ति व अहिंसा के महत्व को शिक्षा में हर पहलू व हर स्तर पर बढ़ावा देना होगा। शान्ति शिक्षा के दार्शनिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, मनोवैज्ञानिक, ऐतिहासिक व आर्थिक स्वरूप पर दृष्टि डालनी होगी। विद्यालयी पाठ्यक्रम में परिभाषित करना होगा। संसार को एक मनोरंजक स्थल के रूप में करना होगा। संसार को एक मनोरंजक स्थल के

रूप में बताकर उसे अधिक से अधिक सुन्दर बनाने के लिए इच्छा शक्ति व सामान्य कौशल का विकास करना होगा। विद्यार्थियों को संसार के अन्य लोगो से उनकी समस्याएँ तथा विभिन्नताएँ बताते हुए भिन्न विचार धारा वाले व्यक्ति के प्रति भी सम्मान का भाव रखने सभी धर्मों का प्रारम्भिक ज्ञान प्राप्त करने को प्रेरित किया जाना चाहिए। संसार के लोगो के मध्य स्थापित अन्त सम्बन्ध का ज्ञान तथा अधिक अच्छे सम्बन्ध स्थापित करने के प्रयासों की ओर उनका ध्यान आकर्षित किया जाना चाहिए।

जो भी हो आज भारत में शान्ति शिक्षा गॉंधी के विचारो से काफी प्रभावित है। यही कारण था कि प्रारम्भ में भारत के कुछ चुने हुए विष्वविद्यालयों में और गॉंधी अध्ययन संस्थानों में गॉंधी अध्ययन और अहिंसा के विषय में शान्ति शिक्षा एवं शान्ति अध्ययन को सम्मिलित किया गया। परन्तु वास्तविकता यह है कि शान्ति शिक्षा का प्रारम्भ विभिन्न विषयों में शान्ति शोध के साथ हुआ। फिर भी 1959 के पूर्व भारत में शान्ति शोध का कोई स्थान नहीं था। सर्वोदय ने तो जय प्रकाश नारायण ने महेन्द्र कुमार द्वारा लिखित पुस्तक : "करन्ट पीस रिसर्च इन इन्डिया" के अपने प्राक्कथन में इसे स्पष्ट रूप से स्वीकार किया है। कि यह बड़े दुःख की बात है कि इस देश में सामाजिक शोध ने शान्ति शोध के क्षेत्र को लगभग पूर्ण रूप से उपेक्षित किया है।

### अध्ययन का औचित्य :-

प्राचीन काल में छात्र अपने गुरुओं के आश्रम में रहकर विद्या अध्ययन करते थे। वही पर वे शस्त्रों, मूल्यों तथा अनेको प्रकार की शिक्षा लेते थे। तब वे अपने गुरुओं द्वारा बताये गये मार्ग का ही अनुसरण करते थे। इसलिए वातावरण पूरी तरह शान्त था। छात्र अपने से बड़ो का आदर करते थे लेकिन धीरे-धीरे विकास की धारा में सामाजिक परिवर्तन हुए जिसके फलस्वरूप जनसंख्या में वृद्धि होने लगी। इसके फलस्वरूप अनेको समस्याओं ने जन्म लिया। जैसे-जैसे सुविधाएँ बढ़ी वैसे-वैसे मनुष्य चिन्ता व तनाव में डूबता चला गया। क्योंकि जनसंख्या विस्फोट के कारण बालक धीरे-धीरे शिक्षा से भी वंचित होने लगा। उसे केवल अपने भोजन व आवास सम्बन्धी चिन्ताओं ने घेर लिया इसी कारण वह अधिकाधिक हाथ पैर मारने लगा। फलस्वरूप जंगल शहरो में परिवर्तित हो गये, और खुली हवा में श्वास लेने वाला व्यक्ति हर समय चिन्ताओं में श्वास लेने लगा। अब चिन्ताओं से उबरने के लिए उसे ऐसे सहारे की आवश्यकता महसूस हुई जो उसे इस संकट से उबार सके। वर्तमान शिक्षा प्रणाली का उद्देश्य मात्र परिक्षाएँ पास करना ही रह गया है। छात्र मूल्यों से विहिन है। सभी को आगे बढ़ने की होड़ है। इस प्रतिस्पर्धा में छात्र अपनी संस्कृति को भूलते जा रहे है। ऐसी स्थिति में उन छात्रों को शान्ति शिक्षा ही सही मायने में छात्रों का विकास कर सकती है।

वर्तमान शिक्षा व्यवस्था में शान्ति शिक्षा का कोई औपचारिक, स्थाई, व्यवस्थित व प्रत्यक्ष स्थान नहीं है। अतः आवश्यकता है यह जानने की कि शान्ति के लिए शिक्षा का क्या स्वरूप होना चाहिए? शान्ति शिक्षा की क्यों आवश्यकता है? और व्यावहारिक रूप से इस शिक्षा को किस प्रकार लागू किया जाना चाहिए। अतः शोधार्थी ने इन्हीं मुख्य तथ्यों को ध्यान में रखते हुए इस विषय को चुना।

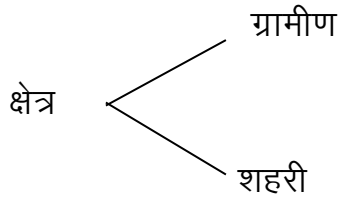
### उद्देश्य :-

1. शिक्षा स्नातक स्तर के ग्रामीण एवं शहरी प्रशिक्षणार्थियों में शान्ति शिक्षा के प्रति जागरूकता का अध्ययन करना।
2. शहरी छात्र एवं छात्रा प्रशिक्षणार्थियों के मध्य शान्ति शिक्षा के प्रति जागरूकता का अध्ययन करना।



## परिकल्पनाएँ :-

शिक्षा स्नातक स्तर के प्रशिक्षणार्थियों में शान्ति शिक्षा के प्रति जागरूकता का निम्न पक्षों में सार्थक अंतर नहीं पाया जाता है।



परिकल्पना संख्या 1. – शहरी व ग्रामीण प्रशिक्षणार्थियों के मध्य शान्ति शिक्षा के प्रति जागरूकता में सार्थक अंतर नहीं है।

सारणी – 1

समूह (ळतवनच)	संख्या (छ)	मध्यमान (ड)	मानक विचलन (णव)	क्रांतिक अनुपात (बतपजपंस तंजपव)	सार्थकता स्तर	स्वीकृत/अस्वीकृत
शहरी प्रशिक्षणार्थी	160	29.69	6.32	2.16	.05 स्तर – .01 स्तर –	अस्वीकृत स्वीकृत
ग्रामीण प्रशिक्षणार्थी	160	28.37	4.42		सार्थक अंतर नहीं है।	

कत्रि छ1छ2.2

160160.2 त्र 318

उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट होता है कि शिक्षा स्नातक स्तर के प्रशिक्षणार्थियों में शान्ति शिक्षा के प्रति जागरूकता संबंधी तथ्यों के आधार पर मध्यमानों की गणना करने से मध्यमान क्रमशः 29.69 तथा 28.37 प्राप्त हुआ है। इन दोनों समूहों के विद्यार्थियों के प्राप्त मध्यमानों के आधार पर गणना द्वारा मानक विचलन क्रमशः 6.32 तथा 4.42 प्राप्त हुआ है। दोनों समूहों के विद्यार्थियों के प्राप्त मध्यमानों एवं मानक विचलनों के आधार पर गणना द्वारा क्रांतिक अनुपात मान 2.16 प्राप्त हुआ। डीएफ 318 स्वतंत्रता के अंश पर .05 स्तर पर सार्थकता मान 1.66 से अधिक एवं .01 स्तर पर सार्थकता मान 2.36 से कम है। अतः निर्धारित शून्य परिकल्पना स्वीकृत होती है क्योंकि शिक्षा स्नातक स्तर के शहरी और ग्रामीण प्रशिक्षणार्थी शान्ति शिक्षा के प्रति समान रूप से जागरूक है इसलिए शहरी व ग्रामीण प्रशिक्षणार्थियों के मध्य शान्ति शिक्षा के प्रति जागरूकता में सार्थक अंतर नहीं है।

परिकल्पना संख्या 2. – शहरी छात्र एवं छात्रा प्रशिक्षणार्थियों के मध्य शान्ति शिक्षा के प्रति जागरूकता में सार्थक अंतर नहीं है।

सारणी – 2

समूह (व्यवस्था)	संख्या (छ)	मध्यमान (ड)	मानक विचलन (एक)	क्रांतिक अनुपात (व्यवस्था/संख्या)	सार्थकता स्तर	स्वीकृत/अस्वीकृत
शहरी छात्र	80	31.61	6.43	4.02	.05 स्तर – .01 स्तर –	अस्वीकृत अस्वीकृत
शहरी छात्रा	80	27.77	5.61		सार्थक अंतर है।	

कृत्रिम छवि 2.2

8080.2 त्र 158

उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट होता है कि शिक्षा स्नातक स्तर के प्रशिक्षणार्थियों में शान्ति शिक्षा के प्रति जागरूकता संबंधी तथ्यों के आधार पर मध्यमानों की गणना करने से मध्यमान क्रमशः 31.61 तथा 27.77 प्राप्त हुआ है। इन दोनों समूहों के विद्यार्थियों के प्राप्त मध्यमानों के आधार पर गणना द्वारा मानक विचलन क्रमशः 6.43 तथा 5.61 प्राप्त हुआ है। दोनों समूहों के विद्यार्थियों के प्राप्त मध्यमानों एवं मानक विचलनों के आधार पर गणना द्वारा क्रांतिक अनुपात मान 4.02 प्राप्त हुआ। डीएफ 158 स्वतंत्रता के अंश पर .05 स्तर पर सार्थकता मान 1.66 एवं .01 स्तर पर सार्थकता मान 2.36 से अधिक है। अतः निर्धारित शून्य परिकल्पना अस्वीकृत होती है क्योंकि शिक्षा स्नातक स्तर के शिक्षा स्नातक स्तर के शहरी छात्र एवं छात्राएँ शान्ति शिक्षा के प्रति समान रूप से जागरूक नहीं है क्योंकि छात्रों छात्राओं की तुलना में अशांतिपूर्ण व्यवहार अधिक पाया गया। इसमें छात्र अधिक हिंसक, क्रोधी और असहनशील पाए गए। अतः शहरी छात्र एवं छात्रा प्रशिक्षणार्थियों के मध्य शान्ति शिक्षा के प्रति जागरूकता में सार्थक अंतर है।

### उपसंहार :-

प्रत्येक राष्ट्र की उन्नति वहाँ की शिक्षा व्यवस्था पर निर्भर करती है। जिस राष्ट्र के शैक्षिक तंत्र जितने मजबूत होंगे। वह राष्ट्र उतनी ही प्रगति करता है। भारत जैसे जनसंख्या वाले देश में तो मूल्य परक शान्ति शिक्षा की आवश्यकता है। जहाँ बेरोजगारी, गरीबी, अपिक्षा व

भुखमरी चारों तरफ व्याप्त है। केवल शान्ति शिक्षा के द्वारा ही इसका निराकरण किया जा सकता है। शान्ति शिक्षा के द्वारा ही हम बच्चों के मस्तिष्क में उच्च सामाजिक मूल्य स्थापित

कर सकते हैं। जिससे प्राथमिक स्तर पर ही बच्चे उन मूल्यों को समझे व आत्मसात करें। जिनसे वे आपस में भाईचारा, समानता, सहानुभूति की भावना को समझ सकें, और उच्च स्तर में जाने तक इन मूल्यों का सदुपयोग करने लगेंगे तो स्वतः ही तमाम समस्याओं से हमें मुक्ति मिल जाएगी। शान्ति शिक्षा द्वारा हम बच्चों में उच्च आदर्शों को स्थापित कर सकते हैं। शान्ति के लिए शिक्षा उन मानव के बारे में जानकारी देती है। जो शान्ति पूर्ण तथा स्वस्थ जीवन के लिए आवश्यक है। यह विस्तृत स्तर पर आकर्षक शिक्षण विधियों के बारे में जानकारी देती है। यह विभिन्न शिक्षाविदों द्वारा विभिन्न देशों में अपनाई गई है और बहुत अधिक प्रभावशाली सिद्ध हुई है।

### संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1. आचार्य महाप्रज्ञ (1994) : चित्त और मन, जैन विष्व भारती प्रकाशन लाडूँनू
2. दषोरा, नंदलाल (1998) : मानसिक शांति, रणधीर प्रकाशन, हरिद्वार
3. कुमार, महेन्द्र (1968) : पीस रिसर्च एन्ड इन्डिया, गॉधीयन इनस्टिट्यूट ऑफ स्टडिज, वाराणसी
4. वेदालंकार, दिलीप (2001) : शांति का शाष्वत मार्ग, वैदिक मानववाद, हंसानन्द नगर नई दिल्ली

### जर्नल्स :-

- गोस्वामी, आयुष्मान (2007), शांति के लिए षिक्षा, भारतीय चिन्तन परम्परा के संदर्भ में, भारतीय आधुनिक षिक्षा, जुलाई-अक्टुबर
- तिवारी, चन्द्रा (2005), शांति के लिए षिक्षा व योग दर्षन, नई षिक्षा, राष्ट्रीय शैक्षिक मासिक, अंक 5-6 दिसम्बर से जनवरी

